सिद्धेश्वरी देवी : गायकी समग्र दृष्टि

डॉ0 चित्रा चौरसिया
असिस्टेंट प्रोफेसर संगीत विभाग
आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद

प्रस्तावना– भगवान शिव की काशी नगरी कला संगीत एवं आध्यात्मिक क्रान्ति का प्रतीक है इस पवित्र नगर में 8 अगस्त 1908 में जन्मी सिद्धेश्वरी देवी जी को 'ठुमरी की रानी' का खिताब उस्ताद फैयाज खान ने दिया था। आप बनारस का ऐसा अनूठा पुष्प थी जिनकी यादों की खुशबू आज भी चमन महका रही है। सिद्धेश्वरी देवी की सांगीतिक शिक्षा 8–10 वर्ष की आयु से आरम्भ हुई। सिद्धेश्वरी देवी जी ने बनारस की चारों पट की गायकी में निपुणता हासिल की। शास्त्रीय व उपशास्त्रीय संगीत में आप पूर्णरुप से पारंगत थी। बुलन्द, भारी व लोचदार आवाज श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर देती थीं। 'ठुमरी व दादरा की भावपूर्ण गायकी, तीनों सप्तकों के स्वरों में पूर्ण वर्चस्व आपकी गायकी को आकर्षण बनाती है। आपने अनेक उस्तादों से शिक्षा अर्जन सुचारु रखा और संगीत के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करती गयी। सिया जी महाराज के शिक्षा के फलस्वरुप सिद्धेश्वरी जी की गायकी में सुन्दरता और संतुलन दिखने लगा था, वर्षो का अभ्यास और सिया जी महाराज के कठिन परिश्रम ने आपको जटिल राग, ख्याल, तराना, ठुमरी, टप्पा, चैती तथा होरी आदि में पूर्ण रुप से पारंगत कर दिया था, अर्थात् शास्त्रीय व उपशास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा आपने प्राप्त की। पूर्ण लगन एवं एकाग्रचित होकर रियाज करने से उन्होंने पूरब अंग की गायकी पर पूर्ण रुप से अधिकार प्राप्त कर लिया और चारों पटों की गायकी होने का सौभाग्य सिद्धेश्वरी जी को प्राप्त हुआ। आपकी संगीत शिक्षा पं0 सियाजी महाराज के मृत्यु तक लगातार उनसे ही चलती रही। उनके बाद देवास के उस्ताद रजब अली खाँ और लाहौर के उस्ताद इनायत खाँ से ख्याल की शिक्षा आपने प्राप्त किया। आपने बनारस के पं0 बड़े रामदास जी से भी शिक्षा ग्रहण किया, जिनको वह अपने श्रेष्ठ गुरु का सम्मान देती थीं। पं0 रामदास जी उस समय के प्रसिद्ध कलाकार थे, जिन्होंने ख्याल, ठुमरी, भजन, ध्रुपद पर अनेक बन्दिशों की रचना की थी। सिद्धेश्वरी देवी जी उनके मार्ग दर्शन में जाने से पूर्व ही संगीत जगत में काफी नाम और प्रसिद्धि कमा चुकी थीं। ''गुरु पं0 रामदास जी का आदर से आभार प्रकट करते समय उनका चेहरा गर्व से चमकने लगता था और वो कहती थीं कि इस उम्र के महान और दानी गुरु चले गये। 'संगीत' जो उन्होंने सिखाया वो आनन्द पूर्वक ईश्वर को प्राप्त करने का माध्यम है।

मूल शब्द– काशी, सिद्धेश्वरी देवी, ठुमरी, बुलन्द, संगीत, गायकी, ख्याल।

इसके अतिरिक्त आपके गायन पर गौहरजान, मलकाजान, जद्दन बाई और शंहशाह मौजुद्दीन खाँ का भी बहुत प्रभाव पड़ा। सिद्धेश्वरी जी एक अच्छी कलाकार ही नहीं बल्कि एक अच्छी महिला भी थीं, उनका अद्भुद, सीधा, सरल, नम्रस्वभाव सबको आकृष्ट करता था। गोरा, रंग, बोलती हुई काली आँखे, लम्बे बाल, गुलाबी होठ, मध्यम काठी और मानवता, दयालुता मनमोहक थी। जब आप गायन करती थीं तब आपकी आँखे बंद होती और बायाँ हाथ कान पर होता था, आपका नम्र, स्वभाव आपके गायन में झलकता था। आपके गायन की पृथक विशेषताए यह थी कि आपके द्वारा बोल–बनाव तथा पल्टों का काम शास्त्रीय गायन अर्थात् ठुमरी एवं दादरा में

''कहन वाली बात'' थी, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण ठुमरी ''तड़पे बिन बालम मोरा जिया''[1] में झलकता है। आप गीत के बोलों की अदायगी को बड़े ही खुले ढंग से प्रस्तुत करतीं और आवाज को फेक कर (Throing Voice) तथा स्वरों को पुकार के साथ लगाती थीं। जो आपके ह्रदय की वेदना के रुप में व्यक्त होती थी।

भारी, बुलन्द व लोचदार आवाज सम पर जोर देकर आवाज को खुले ढंग से प्रस्तुत करना, मध्य, मन्द्र, तार तीनों सप्तकों में पूर्ण अधिकार, मीड़ खटका, मुर्की वक्र तान और टप्पे की तानों में गिटकिरी का प्रयोग आपकी गायकी को प्रभावशाली बनाती थी। परम्परागत ठुमरी में आपने टप्पे की छोटी–छोटी तानों एवं ख्याल तथा ध्रुपद के समान बढ़त मिलाकर ठुमरी की अपनी एक विशिष्ट शैली का सृजन किया, साथ ही अपनी प्रभावशाली गायकी से इस नवीन शैली को लोकप्रिय बनाने में भी सफलता प्राप्त की। ठुमरी की लग्गी लड़ी में सुन्दर बोल बनाव तथा एरी, अरी, ए, हे, रामा, राजा, जैसे भाववाचक शब्दों की अदायगी उपशास्त्रीय गायकी को आकर्षक बनाती थी। जिसका प्रयोग आपके द्वारा गायी हुई ठुमरी ''जब सुधि आवे''[2] (अध्धा ताल) तथा दादरा ''भीग जाऊँ मैं पिया'' (ताल दादरा) में दिखाई देता है।[3] विद्वानों के साक्षात्कार के अनुसार आपकी गायकी की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता ''पुकार'' थी अर्थात् स्वरों को विभिन्न भाव के अनुसार लगाना और ठुमरी व दादरा की पूरी पंक्ति को प्रत्येक भाव के साथ गाना सारंगी व तबलावादक को गायन के मध्य में काम दिखाने को पूर्ण समय देना तथा बुलन्द व भारी आवाज को फेंक कर लगाना आपकी प्रमुख विशेषता थी। आपकी गेय ठुमरी ''साँझ भयी घर आजा''[4] पुकार का अत्यन्त मधुर व प्रभावशाली उदाहरण है।

आपके गायन में राग की शुद्धता, लयात्मक गति और भाव के विविध रंग दिखते थे, ठुमरी गायन में आपने श्रृंगार, विरह से लेकर भक्ति भाव में भी अपना अनूठा तथा मनमोहक अंदाज जोड़ा। ठुमरी गायन हो या कजरी, आपके द्वारा बंदिश के भावानुसार राग का चयन बेजोड़ था, जिसके फलस्वरुप श्रोताओं को काव्य के भाव का रस मिलता था। आप अपने गुरु बड़े रामदास जी के इस परामर्श से पूर्णतया सहमत थी–''Music is the medium for pleasing and attaining God. You should never feel proud of any success. Always remain humble. The day your tears flow during your Sangeet Sadhana your music will have attained mellowness and maturity."[5] डॉ0 बलदेव सहाय के अनुसार ''ठुमरी की रानी'' सिद्धेश्वरी देवी को मैं अनेको बार मिला तथा उनकी गायी हुई ''ठुमरी'' को अनेको बार सुना, यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि मैंने जितनी बार भी उनसे मिला, व उन्हें सुना प्रत्येक बार उनके संगीत में कुछ नया व अनोखा तथ्य पाया, यह उनकी विशेष योग्यता थी, कि उनके गायन में बासीपन व नीरसता नहीं थी, भले ही लोगों के आग्रह पर वह वही, गाना गाती थीं, जिसे हम कई बार सुन चुके होते थे, परन्तु वह गाना उनके मुख से प्रत्येक बार नया व सुरीला लगता था। सिद्धेश्वरी जी को ''ख्याल'' राग में प्रवीणता हासिल थी, उनके द्वारा स्वरों का विस्तार, नियंत्रण व श्रृंगार अकल्पनीय था, आपके अन्दर ''ठुमरी'' के शब्दों के चयन व विस्तार की अद्भुद क्षमता थी, श्रोताओं को उनकी गायकी का तरीका भाता था, बनारस घराने की चारों पटों की गायन विद्या में आप विलक्षण गायिका थीं और इसी अद्भुत क्षमता के कारण आप आम व खास सभी जगह लोकप्रिय थीं।''[6]

सुमुति मुटाटकर जो कि संगीत शास्त्री और महान कलाकार थीं, उन्होंने सिद्धेश्वरी देवी जी की गायकी सुनी थी उन्होंने उनके लिए लेख लिखा है कि मैं अपने दिल की अंतरमन कानों से इस संगीत को सुन सकती हूँ, सिद्धेश्वरी जी के संगीत की विशेष गुवणत्ता उनकी गहरी अध्यात्मवाद से आती थी, जब भी वह गातीं तब ऐसा लगता था जैसे की वो दर्शकों के लिए नहीं किसी उच्च कल्याण के लिए गा रही हैं। उनकी संगीत के इसी रहस्यवादी गुणवत्ता में उन्हें अन्य संगीत कलाकारों से अलग कर दिया था, गायन करते समय उनका पूरा शरीर और आत्मा राग में डूबा हुआ रहता था, हलांकि वह स्वयं एक उच्च दुनिया को पार कर चुकी हुई होतीं, जब उनके संगीत और भव्य जादू की चर्चा होती तब वो अक्सर ही कहा करती थीं, कि संगीत प्रेम की तरह है वो सबसे बड़ी पूजा है, यह दोनों चीजे सबसे आसान भी और मानव जीवन को सबसे कठिन प्रयास भी, प्रार्थना का अर्थ ध्यान है और संगीत प्रेम का ध्यान है।[7]

सिद्धेश्वरी जी की गायकी में श्रृगार रस के अतिरिक्त भक्ति रस का भी भाव था, उनका संगीत आध्यात्म में पूर्ण रूप से लिप्त था, वह खुद को सदैव, भगवान के सबसे करीब महसूस करती थीं, उनको भजनों से विशेष प्रेम था उन्हें तुकाराम, सूरदास, कबीर दास, मीरा बाई, और नामदेव के लिखित पद अत्यधिक प्रिय थे। ग्रन्थ साहिब के भजनों का एक बड़ा हिस्सा उन्हें याद था, इसके अतिरिक्त आपको रवीन्द्रनाथ टैगोर जी के रवीन्द्र संगीत से भी प्रेम था, टैगोर जी का एक भजन आप सदैव गाती थीं ''कोबे तुमी आसबे बोले रोहीबो ना बोशे आमी चोलीबो बाहीरे, आर शोमए नाही रे'' हे भगवान आप कब मेरे पास आएगें? मेरे पास अब और समय नहीं बचा है मैं आपके लिए इंतजार कर रहीं हूँ। सिद्धेश्वरी देवी जी के अनुसार ''मेरा संगीत कृष्णा, मेरे बचपन का दोस्त और ईश्वर तक पहुँचने का एक साधन बन गया मैं अपने अकेलेपन में रोती थी, कि कृष्णा मेरे पास आए वो मेरे पास ऐसे आए जैसे वो अपने सारे भक्तों के पास आते थे। शायद मेरी ठुमरी गायन करने का मुख्य आधार परमात्मा को प्राप्त करना था। मैं खुद जन्म से एक विराहना थी, जो प्रभू से यह याचना करती थी कि वो मुझे स्वीकार करें, और खुद में मुझे आत्मसात कर लें।''[8] यद्यपि आप शिव भक्त भी थीं किन्तु ऐसा नहीं कि आपने भगवान शिव के ही भजनों को प्राथमिकता दी हो वरन् राम कृष्णादि के बहुत से भजन भी, आपके द्वारा गाये गये। आपके सम्बन्ध में ''सविता देवी'' जी के अनुसार माँ पूरी तरह संगीत में ही डूबी रहती थीं। हमेशा कहती थी– जनमत – मरत दुःखई – दुख हुई आदि भजनों में लीन रहतीं।''[9]

सिद्धदेश्वरी देवी जी जिस अंग से ठुमरी प्रस्तुत करती थीं, व अन्य लोगों के लिए सम्भव न हो पाया, ''ठुमरी को क्षुद्र प्रकृति की गायन शैली से उठाकर हिन्दुस्तानी संगीत में एक सम्मानित स्थान दिलाने के श्रेय उन्हीं को हैं।[10]

सुशीला मिश्रा के अनुसार – "Although my thumri is fully of the Banaras ang. I incorporate elements of the Khayal in to it. You may say that my thumari singing is Khayalanga Pradhan"[11]

सिद्धेश्वरी देवी जी ने अपनी प्रभावशाली गायकी से ध्रुपद, ख्याल, टप्पा, ठुमरी, होली, चैती, कजरी, निर्गुण भजन तक की गायन शैली की पूर्ण पारंगत गायिका के रूप में सम्पूर्ण देश में अपनी एक विशेष एवं अलग पहचान बनाई, आपने अपनी दानेदार बुलन्द एवं रसीली आवाज से बनारस अंग की ठुमरी गायकी को अपनी मौलिकता के साथ व्यवहृत किया। अधिकांशतः आपके ठुमरी – दादरा गायन का साहित्य भक्तिपरक होने से विरह एवं भक्ति भाव प्रमुख रूप से निर्वाहित होते थे।

आपका संगीत आध्यात्म से लिप्त तथा अलौकिक गुणों से भरा हुआ था। उनका संगीत मानव को परमात्मा से जोड़ता था जो भावनाएं उनके गायन जैसे ख्याल, ठुमरी और भजन में हमेशा नज़र आती थी, वो विरह और भक्ति की भावना ही थी। उनकी ठुमरी में एक रहस्य था जो कि उस शब्दों को एक प्रार्थना में बदल देता था उनकी ठुमरी और भजन में जो पुकार थी उसमें रोते हुए भक्त की मनोवेदना भरी होती। सिद्धेश्वरी देवी जी जब भी अपनी गायन की प्रस्तुति देती थीं तब वो अपने आस–पास के लोगों के साथ आत्मीयता का माहौल बना कर रखती थीं। उनका संगीत अन्तन्त युवाओं की एक छवि प्रस्तुत करता था। वो एक बार अपनी भावनाएं गीता मेयर को बता रही थीं कि ''मुझे कभी भी ये नहीं पता होता था कि मैं क्या गाने वाली हूँ। बहुत बार तो ऐसा भी होता था कि मैं घबराई भी हूँ, लेकिन जैसे ही मैं शुरू करती थी वो बहुत ही आसानी से हो जाता था।[12]

अतः सिद्धेश्वरी देवी जी पूरे देश की सुप्रतिष्ठित संगीत प्रेमी रियासतों से लेकर आकाशवाणी केन्द्रों तथा जनसामान्य तक के बीच अतिशय लोकप्रिय गायिका रहीं। काशी की मौलिक ठुमरी, टप्पा को जैसी जीवन्तता आपने अपनी साधना से प्रदान की, वह अनूठी एवं प्रशंसनीय है।

सन्दर्भ

- [1]https://youtu.be/mLwZ_VV4vw0
- [2]https://youtu.be/kZorvjFzcXM
- [3]https://youtu.be/WKWcbwlHhUo
- [4]https://youtu.be/WKWcbwlHhUo

नोट–उदाहरण में दी गई ठुमरी को दिए हुए सन्दर्भ के Link द्वारा सुना जा सकता है।

- [5]बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत (पृष्ठ संख्या 134) डॉ0 सुधा सहगल एवं डा0 मुक्ता
- [6]मॉ सिद्धेश्वरी सविता देवी पुस्तक पृष्ठ संख्या 11
- [7]Writes Sumati Mutatkar' I can hear this music in the innermost corners of my heart.' The special quality of Siddheshwari's music came from her deep spiritualism. When she sang, she seemed to be singing not merely for her immediate audience but for some higher being. This mystic quality of her singing is what made her different from the other musical exponents of her time. While singing, her whole being appeared to be immersed in the melody as though she had transcended to higher world of her own. While discussing her philosophy of music and its grand mystique, she often used to say, 'Music is love-- the greatest prayer. it is both the easiest and the most difficult endeavour of human life. Prayer means meditation, and music is the meditation of love'.

  माँ..... सिद्धेश्वरी देवी (सविता देवी) पृष्ठ सं0 108
- [8]My Music became a means of reaching out to Krishna, the friend and deity of my childhood. I had wept for Him to come to me in my loneliness. He did come, as he had come to so many of his devotees. It is probably this longing for union with the divine that became the mainstay of my thumri singing later. It was never difficult for me to recreate the emotions of loneliness and the essence of incompleteness that comes from being without love. These are the body and soul of the emotions of viraha. I have been a virahini since my birth, pleading to the Lord and the beloved to accept and assimilate me into him.

माँ.....सिद्धेश्वरी देवी (सविता देवी) पृष्ठ सं0 109

- [9]बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत, पृष्ठ संख्या 134
- [10]ठुमरी एवं महिला कलाकार – पूर्णिमा द्विवेदी पृष्ठ सं0 270
- [11]बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत डा0 सुधा सहगल एवं डा0 मुक्ता पृष्ठ संख्या 139
- [12]She once told Geeta Mayer, I never know what I am going to sing. Many a time, I am even nervous. But, as soon as I begin, It all comes effortlessly'

माँ.....सिद्धेश्वरी देवी (सविता देवी) पृष्ठ सं0 112.

- शोध प्रबन्ध डॉ0 चित्रा चौरसिया।
- माँ..... पुस्तक (सविता देवी)।
- ठुमरी एवं महिला कलाकार (पूर्णिमा द्विवेदी)।
- बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत (डॉ0 सुधा सहगल एवं डॉ0 मुक्ता)।
- संगीत मासिक पत्रिका (महिला संगीत) मई 1987